शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

मनुष्य हृदय की अतल गहराई : पोस्ट बॉक्स न.203

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

ख्यात साहित्यकार चित्रा मुद्गल को उनके लिखे उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा' पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कार की घोषणा की है। जब चित्रा जी उपन्यास के विमोचन समारोह में इंदौर आयी थीं, तब उनसे हुई मुलाक़ात में चित्राजी ने इस उपन्यास को पढने का लगातार आग्रह किया। सच मानिए, जब मैंने उपन्यास पढ़ना प्रारंभ किया तो उसे छोड़ नहीं सका। एक तो उपन्यास का विषय भी बिलकुल नया और जिस शैली में उपन्यास लिखा गया है, वह एकदम अनूठी है। मैंने उपन्यास पढ़ते हुए इस बात पर भी विचार किया कि इसे और किस प्रकार से लिखा जा सकता था क्या ? उत्तर यही मिला 'नहीं।' मां-बेटे की संवेदनाओं को आपने जितनी गहराई से उजागर किया है, वह लाजवाब है। उपन्यास का एक-एक संवाद हृदय की अतल गहराइयों का स्पर्श करता है। पढ़ते हुए यह प्रश्न भी उठा कि आपने आखिर यह कैसे लिखा होगा ? निश्चित ही जब वे इसे लिख रही होंगी, तब सामान्य भूमिका पर नहीं होंगी। उपन्यास लिखने के दौरान 'बा' और 'बिन्नी' के किरदार को स्वयं में गहराई से महसूस किया होगा। समाज के सामने अभी तक किन्नरों का एक ही पक्ष उजागर होता रहा है। उनके नजदीक आते ही अनेक लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं, अनेक लोग भयभीत हो नजरें चुराने लगते हैं, अनेक लोग उनसे चुहलबाजी करने लगते है, अनेक लोग भतीजे और उनके साथियों जैसा व्यवहार करने लगते हैं, दूसरी तरफ ऐसे भी लोग हैं जो उनके आशीर्वाद को अपनी तरक्की के लिए अनिवार्य मानते हैं, माताएं अपने बच्चों की अलाएं-बलाएं उतारने के लिए उनके प्रति पूजनीय भाव रखती हैं। उपन्यास मानवीय संवेदनाओं से भरपूर है। पाठक इसमें डूबता-उतराता रहता है। जब मैंने एमए की छात्रा से यह प्रश्न किया कि उपन्यास कैसा लगा, तो उसने बिना किसी बनावटीपन के कहा कि उपन्यास के अंत तक आते-आते उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। दूसरी छात्रा का यह कहना था कि प्रकृति की भूलों को मनुष्य ने अपनी 'समझदारी' से अलग दर्जा दे दिया है। उन्हें ही यह तय करने दीजिए कि वह अपने को स्त्री मानना चाहते हैं अथवा पुरुष। यद्यपि राजनीति का स्पर्श होते ही 'बिन्नी' की नियति तय हो जाती है। किन्नरों को दिया गया उसका भाषण और तिवारी जी की प्रतिक्रिया उसके साथ किसी अस्वाभाविक घटना पर मुहर लगा देती है, परंतु जिस ढंग से उपन्यास का अंत किया है, वह मुझ जैसे पाठक को गहरे अवसाद में डाल देता है। 'बिन्नी' की मां से मिलने की छटपटाहट, वंदना बेन का टाइम्स ऑफ़ इंडिया में बिन्नी की घर वापसी के लिए विज्ञापन प्रकाशित करवाना, तिवारी जी का काइयांपन जिसे राजनीति में स्वाभाविक गुण माना जाता है, अंत में छः पंक्तियों में किन्नर की मृत्यु का समाचार दिया जाना, उपन्यास को श्रेष्ठ बना गया। इससे सुंदर स्वाभाविक अंत नहीं हो सकता था। यहां पर दो

ही मार्ग बचे थे या तो हत्या अथवा आत्महत्या। 'आत्महत्या' का विचार 'बिन्नी' को आया, परंतु यह उसके स्वाभिमान से जीवन जीने के विपरीत होता। आत्महत्या के लिए उसने प्रयास भी नहीं किया। उपन्यास में बहुत सारे प्रश्न हैं जिनके उत्तर भारतीय समाज को ढूंढना हैं। उपन्यास की भाषा बहुत कसी हुई है। चित्रा जी की यह खूबी है कि पात्रों के गुस्से को भी आप संयत भाषा में अभिव्यक्त कर देती हैं। केवल संकेतभर देती हैं और बात पूरी हो जाती है। आप तथाकथित 'यथार्थ' को 'धारदार' बनाने के लिए अपशब्दों को 'ठूंसती' नहीं हैं। जैसा आजकल के लेखन और फिल्मों में दिखाया जा रहा है। इस उपन्यास में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक सभी का संस्पर्श किया गया है। एक जगह पुनरुक्ति दोष है। 2016 के संस्करण में इसके पृष्ठ क्रमांक 162 की पंक्तियां पृष्ठ क्रमांक 164 पर भी अंकित हो गयी हैं, "देह को थोड़ा आराम देने की सोचो तो कई दिनों की थकान मुआवजा मांगने लगती है, बा।"

एक श्रेष्ठ उपन्यास को साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार हेतु चुने जाने पर चित्राजी को शब्दब्रहम की ओर से हार्दिक बधाई।